कौटिल्य एकेडमी

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका

Mains Answer Sheet

प्रश्न संख्या

Rajat [illegible]

1 (a)

पैठण

1. [illegible]

2. [illegible]

3. [illegible]

(b) [illegible]

1. [illegible]

2. [illegible]

→ [illegible]

[illegible]

[illegible]

(c) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] – [illegible]

– [illegible]

(D) [illegible]

Kupali Chaubey

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

1 (A) पेट्रार्क
- पुनर्जागरण काल से संबंधित
- इटली के निवासी
- मानवतावाद के संस्थापक माने जाते हैं

(B) वर्साय की संधि
- प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात 1919 में संधि हुई
- जर्मनी के साथ संधि
- इस संधि में जर्मनी पर कई अपमानजनक शर्तें लादी जैसे क्षतिपूर्ति राशि, निःशस्त्रीकरण, अलसास लॉरेन छीन लिया गया आदि

(C) रुद्रदामन
- रुद्रदामन शकों का सबसे प्रतापी शासक दूसरी काल प्रथम शताब्दी
- कार्य - कई सुदर्शन झील की मरम्मत
- गिरनार अभिलेख (शुद्ध संस्कृत में आदि)

(D) शैशुनाग वंश

संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(D) अरविन्दु वेडा

- यह विजयनगर सम्राज्य से संबंधित
- 15वी शताब्दी में चौथा राजवंश था,
- संस्थापक - तिरुमल

(E) लार्ड मैकाले

- लार्ड विलियम बैंटिक (1828-35) के कौंसिल में लार्ड मैकाले विधि सदस्य
- बैंटिक ने मैकाले को शिक्षा समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया
- प्रभाव - अंग्रेजी को भारतीय शिक्षा का माध्यम
  - पाश्चात्य शिक्षा को अपनाने वाला।

(F) ऑपरेशन पोलो

- सैनिक अभियान था
- 1948 में चलाया गया
- हैदराबाद रियासत के शासक निजाम के विरुद्ध जारी अभियान
- परिणाम - हैदराबाद रियासत को भारत संघ में शामिल

(G) पूना पैक्ट

- कब हुआ – 24 सितम्बर 1932
- किसके बीच – गांधी जी व डा. अंबेडकर के बीच
- प्रावधान – सांप्रदायिक पंचाट में उप. दलितों के पृथक निर्वाचन को समाप्त कर उनके लिए 71 के स्थान पर 148 स्थान आरक्षित

(H) वल्लभ भवन

- यह म.प्र. की राजधानी भोपाल में स्थित प्रशासनिक भवन है
- राज्य सचिवालय को वल्लभ भवन के नाम से जाना जाता है

(I) आदमगढ़

- पाषाणकालीन स्थल
- म.प्र. के होशंगाबाद जिले में स्थित
- इसका शैलचित्र यहाँ की प्रमुख विशेषता है

(J) शंकरशाह व रघुनाथ शाह
गढ़मंडला से संबंधित है
- जबलपुर के गोंड राजवंश के वंशज
- 1857 की क्रांति में भाग लिया था।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

(ख) पद्माकर

- मध्यकालीन साहित्यकार
- सागर में जन्मे
- रचनाएँ - 'हिम्मत बहादुर विरुदावली'
  जगतविनोद

(ग) ?

(घ) बवासार वृक्ष

(ग) म.प्र. आदिवासी लोककला परिषद
- स्थापना - 1980
  उद्देश्य - जनजातीय प्रदेश की जनजातियों की कलाओं, स्थापत्य कला, लोककला आदि के संरक्षण, संवर्द्धन व विकास के लिए
  - चौमासा उसका प्रतिष्ठित प्रकाशन

(५) कुमार गंधर्व पुरस्कार

- यह पुरस्कार शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में दिया जाता
- शुरुआत – 1992-93
- राशि – 1.25 लाख

(६) म.प्र. इको पर्यटन बोर्ड

सिकंदर के आक्रमण के प्रभावों का वर्णन?

326 ई.पू. में सिकंदर ने भारत में प्रवेश कर व [illegible] पोरस [illegible] के पोरस को पराजित करके उसके एक बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित किया।

सिकंदर (यूनानी) आक्रमण के प्रभावों को निम्न रूप में देखते हैं-

→ सिकंदर के आक्रमण से राजनैतिक एकीकरण को बल मिला, छोटे-2 राज्य बड़े राज्य में शामिल हुए।

→ छोटे-2 रियासतों का अस्तित्व समाप्त हो गया;

→ भारत-पश्चिम सिकंदर के द्वारा बंदरगाहों, नदी की खोज, व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई व नवीन मार्गों की खोज।

→ भारत कला में यूनानी शैली का प्रभाव।

→ यूनानी मुद्रा पद्धति का विकास (उल्लूक शैली के सिक्के)

इसके आधार पर मौर्य साम्राज्य का निर्माण किया; व सामाजिक व आर्थिक व सांस्कृतिक विकास को गति प्रदान की।

प्रश्न संख्या — मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका (Mains Answer Sheet) — कौटिल्य एकेडमी, सफलता का प्रवेश द्वार...

2 (ग) सि

सिकंदर के आक्रमण के प्रभावों का वर्णन?

326 ई.पू. में सिकंदर ने भारत में प्रवेश कर व सर्वप्रथम पोरस के साथ युद्ध में पोरस की पराजय हुई। इसने एक बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित किया।

सिकंदर (यूनानी) आक्रमण के प्रभावों को इस प्रकार देखते हैं—

→ सिकंदर के आक्रमण से राजनैतिक एकीकरण को बल मिला छोटे-2 राज्य बड़े राज्य में शामिल हुये।

→ छोटे-2 रियासतों का अस्तित्व समाप्त हो गया।

→ उत्तर-पश्चिम सिकंदर के प्रवेश। बंदरगाहों, नदी की तलाश व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई व नवीन मार्गों की खोज।

→ गांधार शैली में यूनानी शैली का प्रभाव।

→ यूनान की मुद्रा कला का विकास (उलूक शैली के सिक्के)

इनके आधार पर मौर्य साम्राज्य का विकास व सामाजिक व आर्थिक व राजनैतिक विकास को गति प्रदान की।

(Mains Answer Sheet)

Q 2 (A) फ्रांस की क्रांति में विचारकों के योगदान की समीक्षा कीजिए?

A फ्रांस की क्रांति 1789 में प्रारंभ हुई व संपूर्ण विश्व को 'स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व' का नारा दिया।

फ्रांस की क्रांति में विचारकों के योगदान देखे तो वह इस प्रकार है

मॉण्टेस्क्यू => 'द स्पिरिट ऑफ लॉ' नामक पुस्तक में शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत व फ्रांस की राजनैतिक व्यवस्था की आलोचना की

वाल्टेयर => 'एरिप तथा रबर' नामक पुस्तक में ब्रिटेन की उदार राजनीति, स्वतंत्रता का उल्लेख

- फ्रांस में व्याप्त बुराईयों व कुरीतियों का उल्लेख तथा कहा 'सौ चूहों के स्थान पर एक शेर का शासन उचित'

रूसो => 'सोशल कान्ट्रेक्ट' में सामान्य इच्छा से राज्य की स्थापना

- स्वतंत्रता, समानता पर बल दिया

अतः विचारकों ने क्रांति की शुरुआत नहीं कि किंतु फ्रांसीसी व्यवस्था की निरंकुशता को उजागर कर नई व वैकल्पिक व्यवस्था का मार्ग सुझाया।

(13) औद्योगिक क्रांति इंग्लैण्ड में ही क्यों हुई समझाइए?

Ans 18वी शताब्दी में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत इंग्लैण्ड से हुई जिसने कारखानों में उत्पादन, नवीन तकनीक आदि के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।

औद्योगिक क्रांति के इंग्लैण्ड में होने के पीछे मुख्य रूप से निम्न कारण दिखाई देते हैं

इंग्लैण्ड में क्रांति के कारण →

- 1688 में गौरवपूर्ण क्रांति जिससे संसदीय प्रणाली व स्थिरता मौजूद थी।
- चारो ओर से समुद्र से घिरा होने के कारण व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि
- प्राकृतिक संसाधनों लोहे व कोयले की प्रचुरता
- कृषि क्रांति हो जाना जिससे अधिशेष पूंजी को उद्योगों में लगाया
- जनसंख्या में वृद्धि से मांग में वृद्धि
- पूंजी की उपलब्धता।
- नवीन वैज्ञानिक खोजें फ्लाइंग शटल, वाष्प इंजन, कारखाना प्रणाली परिवहन व संचार की व्यवस्था ने उत्पादन व बाजार में वृद्धि की

PTO

उपर्युक्त अनुकूल परिस्थितियों ने इंग्लैण्ड मे औद्योगिक क्रांति के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार...

30. इतिहास के निर्माण में अभिलेखों का क्या महत्व बताइए ?

इतिहास लेखन में पुरातात्विक स्रोत के रूप में अभिलेखों को लिया जाता है जिसके अंतर्गत, स्तंभ लेख, गुहा, ताम्रपत्र आदि आते है

अभिलेखों के महत्व पर दृष्टि डाल तो वह निम्नानुसार है-

- काल निर्धारण => इतिहास के समय का पता चला, प्राचीन मध्य-काल से संबंधित
- सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक जानकारी => उस काल में वहाँ के सामाजिक आर्थिक स्थिति का पता चलता
  - अशोक के अभिलेखों
  - हाथीगुफा अभिलेख आदि
- साम्राज्य विस्तार का पता चलता => किसी शासक व वंश का शासन कहाँ से कहाँ तक है
  => मौर्य साम्राज्य में शाहबाजगढ़ी से मास्की अभिलेख
  => प्रयाग प्रशस्ति
- विदेशी आक्रमण => (एरण) अभिलेख से हूणों के आक्रमण
- राजाओं के नाम => अभिलेखों उस काल के शासक के नाम जैसे कनेरा अभिलेख अशोक का नाम

उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि अभिलेख इतिहास की जानकारी के महत्वपूर्ण स्रोत है।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

2 (अ) सिकंदर के आक्रमण के प्रभावों का वर्णन?

326 ई.पू. में सिकंदर ने भारत में प्रवेश कर व सर्वप्रथम पोरस के साथ युद्ध में पोरस की पराजय हुई। इसने एक बड़े क्षेत्र पर अपना प्रभाव स्थापित किया

सिकंदर (यूनानी) आक्रमण के प्रभावों को इसप्रकार देखते हैं-

→ सिकंदर के आक्रमण से राजनैतिक एकीकरण को बल मिला छोटे-2 राज्य बड़े राज्य में शामिल हुये।

→ छोटी-2 रियासतों का अस्तित्व समाप्त हो गया।

→ उत्तर-पश्चिम सिकंदर के प्रवेश बंदरगाहों, नये की तलाश व्यापार-वाणिज्य में वृद्धि हुई व नवीन मार्गों की खोज।

→ गांधार शैली में यूनानी शैली का प्रभाव।

→ यूनान की मुद्रा कला का विकास (उलूक शैली के सिक्के)

इसके आधार पर मौर्य साम्राज्य का विकास व सामाजिक व आर्थिक व राजनैतिक विकास को गति प्रदान की।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

(b) अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण नीति की समीक्षा कीजिये?

1296 ई. में अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली सिंहासन पर बैठा, विजय व धन की लालसा में इसने एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की थी।

अलाउद्दीन खिलजी की दक्षिण नीति पर प्रकाश डालें तो निम्न बिंदु निकलकर आते है

- यह नीति अलाउद्दीन की महत्वाकांक्षा का दर्शाती
- वह स्वयं दक्षिण विजय में नहीं उलझा बल्कि 'मलिक काफूर' को दक्षिण की विजय के लिए भेजा
- दक्षिण पर प्रत्यक्ष नियंत्रण नहीं किया
- दक्षिण के कई राजाओं से मित्रता पूर्ण संबंध स्थापित किए देवगिरि के रामचन्द्र देव को 'रायरायान' की उपाधि व अधीनता स्थापित साम्राज्य अन्य राज्यों के साम्राज्य मे सहायता
- दक्षिण राज्यों को अधीन कर, कर वसूल करना।

इस तरह अलाउद्दीन खिलजी अधिक से अधिक धन संचय के क्रम व स्वयं 'सिकंदर ए सानी' की उपाधि के एक बड़े साम्राज्य की नींव रखी।

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार-

प्रश्न 2 (B) बंग-भंग आंदो. पर टिप्पणी

1905 में भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा बंगाल का विभाजन किया जिसके प्रतिक्रिया में भारतीयों ने बंगभंग आंदो. किया।

बंगभंग आंदो.
- कब
- कारण
- नेतृत्व कर्ता
- कार्य प्रणाली
- परिणाम

कब - 16 Oct 1905 में

कारण - बंगाल विभाजन ब्रिटिश मत के अनुसार प्रशासनिक था। वही भारतीयों का मत के अनुसार राष्ट्रीय चेतना व भाषा को आधार बनाकर विभाजन।

नेतृत्वकर्ता - बालगंगाधर तिलक
लालालाजपतराय
बिपिनचंद्रपाल उग्रवादी नेता

कार्यप्रणाली - स्वदेशी आंदो. व विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार
- धरना, आम सभा का आयोजन वीर गीतो (आमार सोनार बंगला) के माध्यम से आंदो. का प्रसार

PTO

परिणाम => 1911 दिल्ली दरबार के समय बंगाल विभाजन रद्द किया

इस तरह बंग-भंग आंदो. शुरुआत समय का सफल आंदो. जिसने आगे के आंदो. की आधारशिला रखी।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

(5) आर्य समाज के पुनर्जागरण में योगदान की जानकारी दीजिये

1875 ई. में बम्बई में दयानंद सरस्वती जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना कि जिसका मुख्य कार्य सामाजिक-धार्मिक सुधार करना था।

आर्यसमाज द्वारा पुनर्जागरण मे महत्व-पूर्ण योगदान दिया जो इस प्रकार है

पुनर्जागरण मे योगदान

- → वेदो की तार्किक व्याख्या तथा 'वेदो की ओर लौटो' का नारा
- → समाज में फैली कुरीतियो जातिप्रथा, छुआछूत, बाल-विवाह आदि का विरोध
- → वर्णव्यवस्था का विभाजन कर्म के आधार
- → स्त्रियों के लिए शिक्षा तथा वेदो के ज्ञान पे अधिकार
- → शिक्षा के लिए गुरुकुल व पाश्चात्य शिक्षा का समर्थन
- → स्वराज जैसे अवधारणा को प्रचार
- → विदेशी राज्य की कल्पना की

इस तरह आर्य समाज तत्कालीन समाज में फैली कुरीतियों का विरोध व नवीन विचारधारा का प्रचार-प्रसार किया जिसे आज भी प्रासंगिक माना जाता।

Q 2 (अ)

खजुराहो मंदिर पर टिप्पणी

950-1050 ई. में चंदेल शासकों का सांस्कृतिक व धार्मिक केंद्र खजुराहो था जो छतरपुर जिले के अंतर्गत आता है

चंदेल शासकों धंग, यशोवर्मा, विद्याधर आदि द्वारा यहाँ अनेक मंदिरों का निर्माण कराया जिसकी विशेषताएं इस प्रकार –

- कुल मंदिरों की 85 संख्या वर्तमान 22 मंदिर मौजूद
- किस धर्म से संबंधित => विष्णु + शैव + जैन धर्म से संबंधित
- शैली -> नागर शैली
- मंदिरों का विभाजन =>

पश्चिम में स्थित
- लक्ष्मण मंदिर
- कंदारिया मंदिर
- चौंसठ योगिनी मंदिर

दक्षिण में स्थित
- दूल्हादेव
- चतुर्भुज मंदिर

पूर्व में स्थित मंदिर
- पार्श्वनाथ मंदिर
- आदिनाथ मंदिर

KAUTILYA ACADEMY INDORE

इस तरह खजुराहो में अनेक शिखर युक्त मंदिरों का निर्माण किये चन्देलों की धरोहर रूपी के भी आमित व वर्तमान पर्यटन का केंद्र है।

2 (k) म.प्र. के प्रमुख 5 सांस्कृतिक समारोह का उल्लेख कीजिए ?

म.प्र. सांस्कृतिक रूप से समृद्ध प्रदेश है यहाँ अनेक संगीतकारो तानसेन, कालिदास अलाउद्दीन खाँ आदि की जन्मभूमि व कर्मभूमि रहा।

म.प्र. में सांस्कृतिक समारोहो का आयोजन किया जाता है जो निम्न प्रकार

सांस्कृतिक समारोह

- खजुराहो समारोह
- तानसेन समारोह
- कालिदास समारोह
- ओरछा उत्सव
- उस्ताद अलाउद्दीन खाँ समारोह

खजुराहो समारोह
⇒ 1976 से प्रारंभ
⇒ भारत के समस्त शास्त्रीय नृत्यों संगीत का आयोजन
⇒ आयोजन प्रति वर्ष फरवरी-मार्च
⇒ देश-विदेश के लोग देखने आते

तानसेन समारोह
⇒ ग्वालियर में आयोजित
⇒ तानसेन की याद संगीत का प्रतिष्ठित समारोह
→ गायक, वादक, संगीतज्ञ भाग लेते

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

कालिदास समारोह => उज्जैन में कालीदास की स्मृति में आयोजन
– संगीत, वाद-विवाद, काव्यप्रदर्शन, चित्र प्रदर्शनी का आयोजन

ओरछा उत्सव – टीकमगढ़ के ओरछा में
– बुंदेलखंड के लोक गायन, वादन का आयोजन

उस्ताद अलाउद्दीन खां समारोह => मैहर में आयोजित
=> अलाउद्दीन के संगीत की विविधता पूर्ण प्रस्तुती होना

इस तरह म.प्र. आयोजित समारोहों का आयोजन पर प्राचीन संगीतकारों को जीवित होने का अनुभव कराता है

KAUTILYA ACADEMY INDORE

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

सफलता का प्रवेश द्वार...

2 (ध) म.प्र. शासन द्वारा पर्यटन के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी दीजिए

म.प्र. में पर्यटन स्थलों में विविधता है ऐतिहासिक, पुरातात्विक, धार्मिक, प्राकृतिक आदि स्थल साथ ही खजुराहो, भीमबेटका व सांची को यूनेस्को ने विश्व सूची में शामिल किया।

म.प्र. शासन पर्यटन के विकास के लिए निम्न कदमों को उठाया

- पर्यटन नीति 2016 ⇒ निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित,
  - म.प्र. टूरिज्म बोर्ड का गठन
  - लैंड बैंक बनाया।
  - पर्यटन को उद्योग का दर्जा

वन्य पर्यटन विकास निगम ⇒ स्थापना 1978
⇒ वन्य पर्यटन का विकास एवं पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहन

म.प्र. टूरिज्म बोर्ड का गठन ⇒ पर्यटन की पब्लिसिटी व ब्रांडिंग उपरोक्त की जा रही।

अन्य कार्य ⇒ खजुराहो अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा।
⇒ पर्यटन स्थलों को रेल से जोड़ना

सरकार के द्वारा पर्यटन के विकास के लिए कदम उठाये गये जो पर्यटन को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होंगे।

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

Q. 3(A) द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों पर प्रकाश डालिये

1939-1945 के बीच द्वितीय विश्व युद्ध को देखा जाता है जिसकी शुरुआत जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर आक्रमण से हुई व कालांतर में संपूर्ण विश्व को अपनी चपेट मे लिया जिसके परिणाम स्वरूप अपार जन-धन की हानि हुई व मानव के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया।

द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों को देखा जाये तो निम्न कारण दिखाई देते है जो इस प्रकार है -

कारण
- पेरिस शांति सम्मेलन
- वैश्विक आर्थिक मंदी
- तुष्टीकरण की नीति

(1) पेरिस शांति सम्मेलन => 1919 में पेरिस मे द्वितीय विश्व की युद्ध की समाप्ति व शांति स्थापित करने के लिए समझौता हुआ

KAUTILYA ACADEMY INDORE

- इस सम्मेलन में मित्र राष्ट्रों द्वारा पराजित राष्ट्रों के साथ संधियां की जो अत्यधिक अपमानजनक थी
- जर्मनी के साथ वर्साय की संधि जिसमें युद्ध का दोषी ठहराया गया
- अपार आर्थिक दंड थोपा गया
- आर्थिक रूप (अलसास-लॉरेन, सार, राइनलैंड) पंगु बना दिया
- सैन्य प्रतिबंध लगा दिये गये
- राष्ट्र संघ की स्थापना में पराजित राष्ट्रों को शामिल नहीं आदि

(3) वैश्विक आर्थिक मंदी :-

प्रथम विश्व युद्ध के बाद सभी देशों की आर्थिक स्थिति जर्जर हो गई
- आपसी तनाव व आत्मविश्वास की कमी से आयातों पर प्रतिबंध व निर्यातों में कमी जिससे व्यापारिक असंतुलन
- अमेरिका द्वारा यूरोप को अधिक मात्रा में ऋण दिया
- 1929 में अमेरिका के स्टॉक एक्सचेंज के पतन ने सभी देशों को आर्थिक मंदी में डाल दिया
- लोकतांत्रिक देशों की असफलता से जर्मनी व इटली जैसे देशों तानाशाही सरकारें स्थापित

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

शस्त्रागार के लिए संन्यवाद व अस्त्र-शस्त्र पर बल
- उग्रराष्ट्रवाद की शुरुआत हुई

तुष्टीकरण की नीति ⇒

- ब्रिटेन द्वारा अपनाई गई तुष्टीकरण की नीति काफी हद तक द्वितीय विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी
- ब्रिटेन ने अपने आर्थिक हितों व साम्यवाद के विनाश के लिए जर्मनी व इटली के साथ यह नीति अपनाई
- जर्मनी के सैन्यीकरण को बल दिया साथ ही म्यूनिख पेक्ट के तहत सुडेटनलैंड की अनुचित मांग मान ली
- इटली में भी अपने व्यापारिक हितों के भूमध्यसागर में शांति व सुरक्षा के लिए इटली द्वारा ने अबीसीनिया के आक्रमण पर चुप रहा। आदि

उपरोक्त कारणों ने द्वितीय विश्व युद्ध को जन्म दिया जिसने संपूर्ण विश्व युद्ध को प्रभावित किया तथा अपार हानि को देखकर इसके उपरांत ही एक सशक्त संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ की आवश्यकता महसूस हुई जो संपूर्ण विश्व में शांति व सुरक्षा स्थापित कर सके।

Q. 3(B) गुप्तकाल प्राचीन काल का स्वर्ण क्या इसके पक्ष में तर्क प्रस्तुत करें

तीसरी शताब्दी में प्राचीन भारत में श्रीगुप्त द्वारा गुप्त साम्राज्य की नींव रखी जिसने एक बड़े क्षेत्र पर लंबे समय तक शासन किया तथा इस वंश के प्रमुख शासकों में चंद्रगुप्त I, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त II स्कंदगुप्त, कुमारगुप्त हुए व मजबूत राज्य की स्थापना इसकाल की जानकारी के स्रोत के रूप में साहित्यिक स्रोत पुराण, स्मृतियाँ आदि व पुरातात्विक स्रोत प्रयाग प्रशस्ति, भीतरी स्तंभलेख, बिलसड अभिलेख आदि है

गुप्तकाल को प्राचीन भारत का स्वर्ण कहने के पीछे के तर्कों को इस प्रकार देख सकते

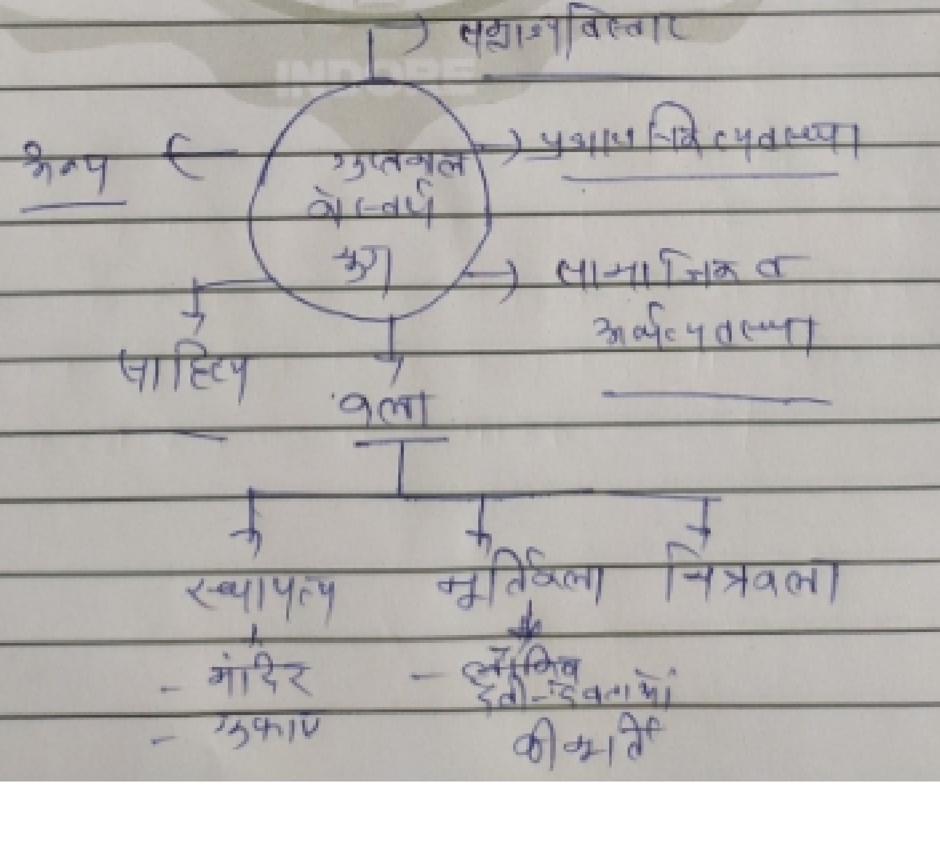

संख्या

(Mains Answer Sheet)

साम्राज्य विस्तार ⇒ सम्पूर्ण उत्तर में आर्यावर्त के व
दक्षिणापथ के रत्नों पर
विजय अर्थात विशाल साम्राज्य

प्रशासनिक व्यवस्था → केन्द्रीकरण पर जोर सम्राट
सभी शक्तियां आहित

→ राज्य को → भुक्ति (प्रांत) → विषय (जिला) →
ग्राम में विभाजित था

→ स्थायी सेना (पैदल + गज + अश्व)

→ राजस्व अनाज व नगद

सामाजिक व अर्थव्यवस्था ⇒ वर्तमान में वर्णव्यवस्था
⇒ अर्थव्यवस्था का
आधार कृषि, सुदर्शन झील की मरम्मत कुमारगुप्त

- आंतरिक व बाह्य व्यापार (पश्चिम एशिया, एशिया अफ्रीका)
- निर्यातित वस्तुएं - कपड़ा, मसाले, हाथीदांत
- आयातित वस्तुएं - घोड़े प्रमुख होते
- उज्जैन, मथुरा प्रमुख व्यापारिक केंद्र

कला के क्षेत्र में - स्थापत्यकला - मंदिरों का
निर्माण इसी काल

उदा. देवगढ़ का दशावतार मंदिर
भीतरगांव मंदिर
लक्ष्मण मंदिर आदि

गुहा मंदिरो - उदयगिरि का
बाघ की गुफाएं

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

मूर्तिकला - ब्रह्मा विष्णु, महेश की मूर्ति
- गंगा-यमुना की मूर्ति
- एरण अभिलेख वराह की मूर्ति

चित्रकला => बाघ के चित्र लौकिक विषयों
अजंता के चित्र धार्मिक विषयों पर आधारित

कला में विविधता व विशेषज्ञता व मौलिकता दिखाई देती है

साहित्य => विषयों में विविधता है जिसकी रचना
विभिन्न साहित्यकारों ने की

कालीदास - 'भारत का शेक्सपियर की संज्ञा'
↳ रचना - अभिज्ञान शाकुंतलम
रघुवंशम आदि

विशाखदत्त - मुद्राराक्षस
वात्स्यायन - कामसूत्र

- विज्ञान से संबंधित साहित्य
आर्यभट्ट - आर्यभट्टीयम
वराहमिहिर - पंचसिद्धांतिका, बृहत्संहिता आदि

उपरोक्त को देखते हुए गुप्तकाल को स्वर्णकाल कहा जा सकता जिसके पीछे कोई संदेह नहीं किंतु अपने परवर्ती काल में यह पतन की ओर उन्मुख हो जाता है व नये स्वतंत्र राज्यों का उदय होता है किंतु इस काल की उपलब्धि हमें आज भी गुप्तकाल की गौरव की कहानी सुनाती है

KAUTILYA ACADEMY

Q 3(b) 10

राष्ट्रीय आंदो. में गांधी जी की भूमिका की विवेचना कीजिये?

भारत में गांधी जी की गतिविधियाँ (1915-1947) के बीच देखी जाती है, 1915 में गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये व एक वर्ष भारत का भ्रमण किया जिसके पश्चात गांधी जी एक राष्ट्रीय आंदोलनकारी में रूप में सक्रिय हुए व अपने अहिंसात्मक व रचनात्मक कार्यों से भारत को स्वतंत्रता के द्वार तक ले गये व अंततः 1947 में भारत आजाद हुआ।

राष्ट्रीय आंदो. में गांधी जी की भूमिका को निम्न प्रकार से देख सकते है -

गांधी जी की भूमिका

- प्रारंभिक गतिविधि
- आंदो. का आयोजन
- कार्य प्रणाली
- रचनात्मक कार्य

गांधी जी की प्रारंभिक गतिविधि ⇒ इस दौरान गांधी जी द्वारा 1917 में चंपारण सत्याग्रह

1918 – में किसानों व मिल के मालिकों के विरोध में खेड़ा व अहमदाबाद आंदो. जिसमें गांधी जी को सफलता मिली

आंदोलनकारी आयोजक ⇒ 1915 के बाद गांधी जी राजनीति में सक्रिय हुए व रौलेट एक्ट के विरोध में सत्याग्रह

- 1920 में असहयोग आंदो.
- 1930 – सविनय अवज्ञा आंदो.
- 1942 – भारत छोड़ो आंदो. का नेतृत्व किया व अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर किया

कार्यप्रणाली ⇒ गांधी जी द्वारा अपने आंदो में हथियार के रूप में सत्याग्रह व अहिंसा का प्रयोग करते

- जिससे जनता का अधिक जुड़ाव आंदो में हो सके
- सरकार दमनात्मक कार्रवाही न कर सके
- हिंसात्मक गतिविधियाँ होने पर आंदो. को वापिस लेना व कुछ समय पश्चात पुनः नवीन ऊर्जा के साथ आंदो. की शुरुआत करना था
- साथ ही सरकार के साथ असहयोग, कानून का पालन न करना, स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग व छात्रों व कर्मचारियों नौकरी का त्याग आदि

रचनात्मक कार्य ⇒ गांधी जी नीति संघर्ष → विराम → संघर्ष की थी

- विराम समय में वह अनेक नवीन कार्यों को करते थे
- चरखे से सूत कातना
- हरिजनोत्थान
- शिक्षा आदि

इसतरह गांधी जी ने एक रणनीति व कार्य योजना के तहत उपरोक्त आंदो. की शुरुआत की तथा अंग्रेजों को भारत के संघर्ष के समक्ष नतमस्तक होना पड़ा जिसमें गांधी जी द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका अदा की व संपूर्ण देश को आंदो. का सहभागी बना दिया इन्हीं कार्यों के कारण गांधी जी को 'राष्ट्रपिता' की संज्ञा दी जाती है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE